Name:- Sonikumari
class:- B.A II year
Deptt:- sanskrit

मृच्छकटिकम्

श्लोक:- दारिद्र्यान्मरणाद्वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्।
अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम् ॥

व्याख्या:- प्रस्तुत श्लोक महाकवि शूद्रक विरचित मृच्छकटिकम् के प्रथम अंक से उद्धृत है। यह दस अंकों का बड़ा ही सुन्दर प्रकरण है जिसमें दरिद्र-चारुदत्त तथा वसन्तसेना की प्रेम कथा का वर्णन किया गया है। इस श्लोक के माध्यम से महाकवि दरिद्र-चारुदत्त के दारिद्र्यमय कष्टकारिक जीवन तथा उसके ~~मन~~ मनोस्थिति का बड़ा ही ~~करुणामय~~ करुणामय वर्णन किया है।

मृत्यु और गरीबी दोनों में से गरीबी की अपेक्षा मृत्यु ही मुझे अधिक अच्छी लगती है। क्योंकि मृत्यु तो मनुष्य को एक बार ही मरने का कष्ट देती है किन्तु यह दरिद्रता तो आजीवन दुःख भोगने को विवश कर देती है। चारुदत्त पूर्व में राजा ही था उसके पास किसी चीज की कमी नहीं थी वह बहुत सुख भोग चुका है किन्तु अपने दानशील स्वभाव के कारण अब दरिद्र हो चुका है जिसके कारण समाज में उसकी कोई ~~प्रति~~ प्रतिष्ठा नहीं है ~~कोई~~ सभी ~~उसका~~ उसे अनदेखी करते हैं जिसके कारण उसे और अधिक पीड़ा हो रही है। अतः वह इस सारी

चीजों तंग आकर मृत्यु और गरीबी में गरीबी की अपेक्षा मृत्यु को ही अच्छा समझता है क्योंकि मृत्यु तो मनुष्य को एक बार ही मारता है या कष्ट देता है परन्तु दरिद्रता तो आजीवन कष्ट देता है

व्याकरण :- प्रस्तुत श्लोक मे आर्या छन्द तथा तथा ~~उपमा~~ ~~अ~~ अर्थान्तरन्यास अलंकार व काव्यलिङ्ग अलंकार

दारिद्र्यामरणाद्वा = दारिद्र्यात् मरणात् वा

~~मक~~
अनन्तकम = न विद्यते अन्तः समाप्तिर्यस्य तादृशम्

~~अल्प~~
अल्पक्लेशम :- अल्पः क्लेशः यस्मिन् तादृशं अल्पसमयदुःखकरत्वात् ।